से ज्यादा जातियों को जोड़ने में कामयाब हुए और २००७ में २१०० तक जातियों के प्रतिनिधियों को जोड़ने में कामयाब हुए हैं। २००९ तक कम से कम ३००० जातियों के प्रतिनिधियों को जोड़ने का लक्ष्य रखा गया था लेकिन २३०० जातियों को जोड़ने में कामयाब हो गए।

(३) प्रचार माध्यमों के निर्माण की गति बढानी होगी।

हम लोग ४ प्रकार के प्रचार माध्यम निर्माण करना चाहते हैं। १. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया २. प्रिंट मीडिया ३. ट्रेडिशनल मीडिया ४. वोकल मीडिया। इसमे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में सीडी, व्हीसीडी और ऑडियो कॅसेट निर्माण करने का कार्य शुरु किया गया है। प्रिंट मीडिया में लगभग ९ भाषाओं में साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक मराठी भाषा में एक दैनिक पेपर सात माह से लगातार चल रहे हैं। ट्रेडिशनल मीडिया में अभी काम शुरु होना बाकी है। वोकल मीडिया में सबसे ज्यादा काम इस दिशा में हुआ है। मगर आनेवाले समय में इसमे सबसे ज्यादा विकास की संभावना है। मूलनिवासी प्रकाशन विभाग की तरफ से १२० बुकलेटो का प्रकाशन किया जा चुका है। परंतु इसकी गति बढाना आवश्यक है।

(४) ह्यूमन रिर्सोसेस अॅन्ड डेव्हलपमेंट इन्स्टिट्यूट का निर्माण जल्द से जल्द करना होगा।

आंदोलन को अगर सफल करना है तो इसके लिए दक्ष एवं प्रशिक्षित मनुष्य बल का होना जरुरी है। अभी प्रशिक्षण के लिए मोबाईल तरिके का उपयोग किया जा रहा है। यह महसूस किया जा रहा है कि इसके लिए एक स्थायी ह्यूमन रिर्सोसेस अॅन्ड डेव्हलपमेंट इन्स्टिट्यूट होना चाहिए। इस दिशा में जल्द से जल्द काम शुरु करना होगा।

(५) पूर्णकालीन कार्यकर्ताओं की संख्या बढानी होगी।

२००८ तक २२६ पूर्णकालीन कार्यकर्ता हो गए थे। २००९ में यह ३०० हो गए। इस साल के अंत तक २००० करने का लक्ष्य रखा गया है। इस गति को तेजी से बढ़ाना होगा।

(६) महिलाओं का नेटवर्कींग खडा करना होगा।

केवल पुरुषों को ही इकट्ठा करने से हमारी आंदोलन की सफलता मिलने की कम संभावना है। इस बात को ध्यान में रखते हुए महिलाओं का नेटवर्किंग खड़ा करने का फैसला किया हुआ है। इस दिशा में पहल हो चूंकि है और उसकी गति बढ़ानी आवश्यक है।

(७) इंटरनेशनल नेटवर्किंग

इंटरनेशनल नेटवर्किंग के लिए अब पूर्णतःज्यादा गतिशील और सुनियोजित रणनीति बनायी गयी है। इसको अमल में लाने के लिए ज्यादा योजनाबद्ध तरीके से काम करना होगा।

(८) राष्ट्रव्यापी संगठन का ढाचा खड़ा करना होगा।

राष्ट्रव्यापी आंदोलन निर्माण करने के लिए राष्ट्रव्यापी संगठन का ढ़ाचा करना होगा। जब तक राष्ट्रव्यापी संगठन का ढ़ाचा खड़ा नहीं होगा तब तक राष्ट्रव्यापी आंदोलन का निर्माण करना संभव नहीं है। इसलिए यह ढ़ाचा खड़ा हो जाना चाहिए।

(९) ३ करोड़ से लेकर १५ करोड़ लोगों तक मोबिलाईजेशन करना

आंदोलन को जनआंदोलन में रूपांतरित करना होगा और इसके लिए ३ करोड़ से लेकर १५ करोड़ लोगों तक मोबिलाईजेशन करना होगा।

(१०) राष्ट्रव्यापी आंदोलन निर्माण निधि

राष्ट्रव्यापी आंदोलन निर्माण करने के लिए उपरोक्त सभी कार्य को पूरा करना होगा और उसको पूरा करने के लिए निधि का बहुत बड़े पैमाने पर जरूरत होगी। इसकी पूर्ति के लिए राष्ट्रव्यापी संघर्ष निर्माण निधि का गठन किया गया है।

महामानवों का सामायिक जन्मदिन उपरोक्त कार्यो को पुरा करने के लिए महत्वपूर्ण कड़ी है। इस दिन का उपयोग निधि संकलित करने के लिए किया जाएगा। देश भर के सभी शोषित, पीड़ित बहुजनों को अपील की जाती है कि, इस कार्यक्रम में हजारों की संख्या में उपस्थित रहें और तन-मन-धन से साथ सहयोग करें।

भवदीय - राष्ट्रीय को-ऑर्डिनेशन कमिटी, भारत मुक्ति मोर्चा

शिक्षित करो! संगठित करो!! संघर्ष करो!!!

भारत मुक्ति मोर्चा

केंद्रीय कार्यालय : 5709/80, रैगरपुरा, करोलबाग, नई दिल्ली - 110 005. दूरभाष - 9999928834, 9868118586

महामानवों का सामायिक जन्मदिन १६ अप्रैल

शुक्रवार दिनांक १६ अप्रैल २०१० समय : शाम ५.०० बजे

स्थान : डॉ.आंबेडकर जयंती मैदान, सेकन्ड स्टॉप,टी.टी.नगर,भोपाल

उद्‌घाटक : मा. रामलाल मेहमी (अमेरिका)

मुख्य अतिथि : मा. सुखदेव राज (दक्षिण आफ्रिका)

विशेष अतिथि : मा. भगवान गायकवाड (गल्फ कन्ट्री)

मा. बी.मुनेम्मा (आय.एफ.एस.वनसंरक्षक, शिवनी)

वक्तागण मा. एस.के. मस्के (अधीक्षण अभियंता,भोपाल)

प्रो. बी.के. चौरसिया (लॉ-कॉलेज,भोपाल)

अध्यक्षता : मा. वामन मेश्राम (राष्ट्रीय अध्यक्ष, बामसेफ)

विषय इस देश में जानवरों की गिनती होती है, मगर ओबीसी की गिनती नहीं होती-एक धोखेबाजी का विश्लेषण

१९३१ में देश में जाती के आधार पर जनगणना हुई थी, तब से आज तक जाति के आधार पर जनगणना भारत में नहीं हुई। जिसकी वजह से ओबीसी की जनसंख्या कितनी है, उसका पता नहीं चल रहा है। पता न चलने की वजह से केंद्र सरकार और राज्य सरकार के द्वारा ओबीसी के विकास के लिए सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक समस्याओं का निराकरण करने के लिए विकास की कोई भी योजना बनाना संभव नहीं हो रहा है।

अनु.जाति और जनजाति के जाति के आधार पर जनगणना होती है। इसलिए उनके विकास की योजनाएँ बनती है। देश में ओबीसी में ऐसी भावना प्रबल हो रही है की जानवरों की गिनती होती है मगर ओबीसी की गिनती नहीं होती है। कांग्रेस और बीजेपी यह दोनो दल नहीं चाहते की, इसकी गिनती हो जाए। इस षड्यंत्र का पर्दाफाश करने के लिए उपरोक्त विषय महापुरूष जीवन संदेश अभियान के तहत लगाया जा रहा है।

(१) महापुरूषों का आजादी के लिए राष्ट्रव्यापी आंदोलन

आधुनिक भारत में १८४८ को शुरू किया गया क्रान्तिबा जोतिबा फुले का आंदोलन हमारी आजादी का आंदोलन था। प्रारंभ में यह आंदोलन क्षेत्रीय आंदोलन था, परंतु बाद में धीरे-धीरे यह आंदोलन राष्ट्रव्यापी आंदोलन में परिवर्तित हो गया। १९१६ में जब बाबासाहब डॉ.आंबेडकर ने नेतृत्व ग्रहण किया तो उन्होंने योजना बनाकर १९४२ तक इसे राष्ट्रव्यापी आंदोलन में परिवर्तित कर दिया था। प्रारम्भ में इस आंदोलन की नींव में बाबासाहब आंबेडकर ने अनुसूचित जाति के लोगों को उपयोग किया और बाद में अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग, NT/DNT/VJNT और महिलाओं को भी जोड़ने के लिए विशेष तौर पर प्रयास किया। संविधान निर्माण प्रक्रिया के द्वारा अल्पसंख्यको को भी जोड़ने का प्रयास उन्होंने किया और इस तरह से राष्ट्रव्यापी आंदोलन का सामाजिक विस्तार किया क्योंकि यह हमारी आजादी का आंदोलन था।

(२) इस आंदोलन को गांधीजी और कॉंग्रेस ने समाप्त किया

गांधीजी द्वारा शुरू किया गया आजादी का आंदोलन समस्त प्रजाजनों के आजादी का आंदोलन नहीं था। गांधीजी भी खुद कहा करते थे कि वह विदेशी वंश में है। इसलिए स्वभावत: गांधीजी द्वारा शुरू किया गया आंदोलन समस्त प्रजाजनों की आजादी का आंदोलन नहीं हो सकता था। इसलिए कॉंग्रेस ने शुरू से हमारे आजादी के आंदोलन को समाप्त करने का प्रयास किया।

(३) समाप्ति के लिए पूना पैक्ट का इस्तेमाल

प्रथम क्रान्तिबा ज्योतीबा फुले के आंदोलन को गांधीजी द्वारा समाप्त करने का प्रयास किया गया। फैजपुर कॉंग्रेस के अधिवेशन में सत्यशोधक समाज के द्वारा जो Non Brahmin Movement चलाया जा रहा था, कॉंग्रेस में विलीन करके समाप्त किया गया। पेरियार रामास्वामी का आंदोलन भी गांधीजी द्वारा समाप्त किये जाने का प्रयास किया गया। परंन्तु गांधीजी को उसमे सफलता नहीं मिली। परन्तु बाबासाहब द्वारा शुरू किये गये आजादी के आंदोलन को समाप्त करने के लिए गांधीजी को सबसे ज्यादा शक्ति लगानी पड़ी। इसके लिए गांधीजी द्वारा पूना पैक्ट का इस्तेमाल किया गया। पूना पैक्ट के दुष्प्रभावों को खत्म करने के लिए बाबासाहब आंबेडकर ने इसके विरोध में १९४२ को राष्ट्रीय स्तर का संगठन खड़ा किया और इसके द्वारा १९४६ में जेल भरो आंदोलन चलाया। इसके बावजूद गांधीजी और कॉंग्रेस के द्वारा संविधान निर्माण के बाद भी पूना पैक्ट को बरकरार रखा गया। स्वतंत्र भारत में Candidate Select करने का अधिकार भी सवर्णो ने अपने हाथ में रखा। परिणामत: पूना पैक्ट से चुनकर आने वाले लोगों को दलालों और भड़वों में परिवर्तित कर दिया गया। यह बाबासाहब भली-भाँति जानते थे, इस बात का सबूत States and Minorities नाम के मेमोरेन्डम में लिखित रूप से संविधान सभा को दिया था। उससे प्रमाणित होता है कि पूना पैक्ट के द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों का इस्तेमाल हमारे राष्ट्रव्यापी आंदोलन को समाप्त करने के लिए किया गया। लोगों ने पूना पैक्ट द्वारा चुने हुए लोगों को अपना प्रतिनिधि और नेता माना। परिणामत: हमारे महापुरूषों द्वारा शुरू किया गया हमारे आजादी का, आत्मनिर्भर, स्वावलंबी एवं स्वाभिमानी आंदोलन समाप्त कर दिया गया।

परिणाम- संवैधानिक अधिकारों की समाप्ति का एलपीजी कार्यक्रम शुरू

१९१६ से लेकर १९५६ तक बाबासाहब ने आंदोलन को राष्ट्रव्यापी आंदोलन में एवं सामाजीक विस्तार करने में सफलता हासिल की थी। इसकी बदौलत संवैधानिक अधिकार ही थे जिसकी वजह से मूलनिवासियों को आजादी का कुछ एहसास हुआ। इसी वजह से इन अधिकारों को समाप्त करने का कॉंग्रेस के द्वारा अभियान शुरू किया गया। यह अभियान राष्ट्रव्यापी आंदोलन के समाप्ति के बाद शुरू किया गया। राष्ट्रव्यापी आंदोलन की समाप्ति की वजह से हमारे संवैधानिक अधिकार (जिसमें आरक्षण का भी अधिकार है) समाप्त करने का फैसला लेने का हौसला बढ़ा। इसी वजह से हम लोगों को राष्ट्रव्यापी आजादी के आंदोलन का पुनर्जीवन करने की सबसे ज्यादा जरूरत महसूस हूई।

आजादी के लिए राष्ट्रव्यापी जनआंदोलन का पुन:निर्माण

आजादी का आंदोलन विदेशी युरेशियन ब्राह्मणों की आजादी का आंदोलन था और इसलिए आजाद भारत में हमारे संवैधानिक अधिकारों द्वारा प्राप्त आजादी को समाप्त करने का षड्यंत्रकारी अभियान चलाया गया। इसलिए हमें आजाद भारत में अपनी आजादी का आंदोलन चलाना होगा। और इसके लिए आंदोलन का पुन:निर्माण करना होगा।

पुन:निर्माण कि पूर्वशर्त - १०००० पूर्णकालीन कार्यकर्ता

१९९९ में हमने संगठन के भौगोलिक विस्तार का और २००१ में संगठन के सामाजिक विस्तार का अभियान शुरु किया ताकि आंदोलन को पुन:निर्माण किया जा सके। परंतु हम इस नतीजे पर पहुँचे है कि, इस आंदोलन का पुन:निर्माण करने के लिए पुर्णकालीन प्रचारकों की आवश्यकता होगी। इसलिए हमने १० हजार पूर्णकालीन कार्यकर्ताओं की नियुक्ति करने का प्लान बनाया। जिसके लिए प्रति वर्ष ३५ करोड़ रूपये का खर्चा होगा। परंतु प्रारंभिक दौर में २००६ तक २६ राज्यों में ५५० जिलों में ५५० पूर्णकालीन प्रचारकों को नियुक्त करना होगा। यह प्रक्रिया शुरू है। अब २०१० चल रहा है इस वर्ष में कम से कम १००० और ज्यादा से ज्यादा २००० पूर्णकालीन प्रचारकों के तौर पर नियुक्त करना होगा। जिस पर कम से कम ५ करोड़ और ज्यादा से ज्यादा १० करोड़ रूपये का खर्चा आयेगा। इसलिए ५ करोड़ से लेकर १० करोड़ रूपये निर्माण करने के लिए विशेष अभियान चलाया जा रहा है।

सामायिक जन्मदिन

हमारे सभी महापुरुषों, महामानवों का हमारे मुक्ति आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका है। उनके आंदोलनों का अगर हम सही तरिके से अध्ययन करे तो पता चलता है कि, हमारे मुक्ति के लिए उनका समान उद्देश्य था। इसलिए हम सभी महामानवों का जन्मदिन इकठ्ठा मनाना चाहते हैं और इकठ्ठा मनाने के लिए हम एक सामान्य (Common) तारीख निर्धारित करना चाहते हैं। जैसे १९ फरवरी को छ. शिवाजी महाराज का जन्मदिन है। ११ अप्रैल को क्रांतिबा जोतिबा फुले का जन्मदिन है। २६ जुन को छ.शाहू महाराज का जन्मदिन है। ऐसे और भी हमारे देश भर में समस्त मूलनिवासियों की मुक्ति के लिए महामानव पैदा हुए। इसलिए हम लोग सभी का एक Common जन्मदिन मनाना चाहते हैं। इसके लिए एक Common दिन निर्धारित करना होगा। बहुत सोच-समझ कर हमनें १६ अप्रैल को सभी महामानवों का सामायिक जन्मदिन मनाने का निर्धारित किया है। इस दिन साल में सारे देश भर से महापुरुषों का सामायिक जन्मदिन मनायेंगे।

१६ अप्रैल सामायिक जन्मदिन-राष्ट्रव्यापी आंदोलन निर्माण दिन

हमारे महामानवों का संघर्ष हमारी मुक्ति और आजादी के लिए था। उन्होंने अपने-अपने समय में अपने-अपने तरिके से संघर्ष किया। आज समय बदल गया है। इसलिए आज की दृष्टि से मूलनिवासियों की मुक्ति के लिए राष्ट्रव्यापी आंदोलन निर्माण करना होगा। हमारा यकीन और विश्वास है कि राष्ट्रव्यापी आंदोलन निर्माण करने से मूलनिवासी बहुजनों की मुक्ति होगी। इसलिए महापुरुषों की सामायिक जन्मदिन को हमने राष्ट्रव्यापी आंदोलन निर्माण दिन के तौर पर मना रहे हैं। इसलिए प्रति वर्ष अलग-अलग राज्यों में १६ अप्रैल को राष्ट्रीय स्तर का कार्यक्रम होगा और उस दिन राष्ट्रव्यापी आंदोलन निर्माण का संकल्प लिया जाएगा। और उसको पूरा करने की कोशिश की जाएगी। यही सभी महामानवों के लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

राष्ट्रव्यापी आंदोलन निर्माण करना होगा

मूलनिवासी बहुजनों की मुक्ति के लिए राष्ट्रव्यापी आंदोलन निर्माण करने का कोई विकल्प नहीं है। इसलिए राष्ट्रव्यापी आंदोलन निर्माण करना होगा। इसके लिए निम्नलिखित कार्यक्रम बनाया गया उसको पूरा करना होगा।

(१) भौगोलिक नेटवर्किंग का काम जल्द से जल्द पूरा करना होगा।

१९९९ मे बामसेफ के द्वारा एक विशेष कार्यक्रम बनाया गया था जिसमें यह निर्धारित किया गया था, कि १० साल के अंदर २० राज्यों में, ५५० जिलों में, ५००० तहसिलों में संगठन का जाल फैलाया जायेगा।

जयपुर में संपन्न बामसेफ के २६ वे राष्ट्रीय अधिवेशन में २६ राज्यों के बजाय २९ राज्यों मे नेटवर्किंग करने में कामयाब हुए और ५०१ जिलों में संगठन का जाल फैलाने में कामयाब हो गए। इसके साथ-साथ ३५०० तहसिलों में संगठन का भौगोलिक जाल फैलाने में कामयाब हुए हैं और बचा हुआ काम जल्द से जल्द पूरा करना होगा।

(२) सोशल नेटवर्किंग का कार्य विस्तारित एवं विकसित करना होगा

भौगोलिक नेटवर्किंग की समीक्षा के बाद हमने दूसरा बड़ा कार्यक्रम बनाया इस कार्यक्रम का नाम सोशल नेटवर्किंग है। जाति के आधार पर मूलनिवासी को ६ हजार जातियों के टुकड़ो में बाँटा गया और तोड़कर गुलामी थोपी गयी। अगर गुलामी खत्म करनी है तो ६ हजार जातियों के प्रतिनिधियों को जोडना होगा। २००६ तक ६ हजार जातियो में से १६००